शबे मेअ़राज नअ़लैन अ़र्श पर?

BAZME FAIZAN -E- RAZA

शब ए मेअ़राज नअ़लैन अर्श़ पर?

क्या शब ए मेअ़राज हुज़ूर सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि वसल्लम नअ़लैन पहन कर अर्श़ पर तशरीफ़ ले गए?

नाशि़र : बज़्मे फ़ैज़ाने रज़ा

रिसाले का नाम : शब ए मेअ़राज नअ़लैन अर्श़ पर?
भाषा : हिन्दी
विषय : तहक़ीक
नाशिर : बज़्मे फ़ैज़ाने रज़ा
नज़्रे षानी : मुहम्मद साबिर इस्माईली क़ादरी रज़वी
हिन्दी अनुवाद : मुहम्मद फ़रमान नूरी
सना इशाअत : 2018
सफ़हात :
किताब मूल्य (कीमत) :

पढ़ने वालों से एक गुज़ारिश

अगर रिसाले में कहीं कोई गलती नज़र आए तो हमें ज़रूर बताएं ताकि हम उसे दुरुस्त कर सकें

परिचय

बज़्मे फ़ैज़ाने रज़ा एक आलमी ग़ैर सियासी मज़हबी तहरीक है जिस की बुनियाद खलीफा ए हुज़ूर गुलज़ार ए मिल्लत, हज़रत अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद महबूब आलम मिस्बाही हफीज़हुल्लाह ने 1434 हिजरी (2012 इसवी) में रखी, और बहुत ही कम वक़्त में आपकी पुर खुलूस काविशों ने ना सिर्फ इस तन्ज़ीम को कामयाबीयों का जामा पहनाया बल्कि उम्मते मुस्लिमा की इस्लाह का एक बड़ा ज़रिया बनाया।

हमारा मक़सद नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, उनके असहाब और औलियाए किराम की शिक्षा को आम करना है, और अवाम में मौजूद बातिल नज़रियात का रद्द करते हुए हक़ को बयान करना है।

हमारे लिए दुआ करें कि हम इसी तरह दीने मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत करते रहें और आने वाली मुश्किलों का सामना कर सकें।

Find Us On Social Networks

Visit Our Blog
Bazmefaizanerazaofficial.blogspot.com

You can also find us on :-



मेअ़राज की रात का वाकया बयान करते हुए कुछ मुकर्रीरीन एक रिवायत को कसरत से बयान करते हैं और वो रिवायत कुछ इस तरह है कि शब ए मेअ़राज जब नबी ए करीम सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि वसल्लम अर्श़ पर पहुंचे तो आप सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि वसल्लम अपने नअ़लैन उतारने लगे तो अल्लाह ने आप सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि वसल्लम को नअ़लैन उतारने से मना फ़रमाया और फिर आप सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि वसल्लम नअ़लैन पहन कर अर्श़ पर तशरीफ़ ले गए।

कुछ मुकर्रिरीन इस रिवायत को इस तरह बयान करते हैं के जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम कोहे तूर पर गए तो अल्लाह तआ़ला ने हुक्म दिया कि ऐ मूसा! अपने नअ़लैन उतार दीजिए जबकि शब ए मेअ़राज हमारे नबी सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि वसल्लम ने नअ़लैन उतारना चाहा लेकिन अल्लाह तआ़ला ने मना फ़रमाया कि "ऐ महबूब! आप नअ़लैन न उतारें बल्कि इसी तरह तशरीफ़ लाएं"
फिर हुज़ूर सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि वसल्लम नअ़लैन पहन कर अर्श़ पर तशरीफ़ ले गए।

इस रिवायत के बारे में कुछ अर्ज़ करने से पहले हम यह बताना अपनी जिम्मेदारी समझते हैं कि यह रिवायत किस किताब में है चुनांचे अल्लामा इस्माईल हक़्क़ी रहमातुल्लाह अलैह ने कुरान ए करीम की इस आयत (انی انا ربک فاخلع نعلیک)

के तहत तफ़सीर करते हुए इस वाक्या को तहरीर फ़रमाया है और बाज़ सूफिया ए किराम के नज़दीक यह रिवायत साबित है लेकिन उलमा ए मुहक़्क़कीन ने इस रिवायत को बेअसल और बातिल क़रार दिया है चुनान्चे चंद उलमा के अक़वाल पेशे खिदमत हैं मुलाहिजा फरमाएं

(1) इमाम ए अहले सुन्नत मुजद्दिद ए दीन ओ मिल्लत आला हज़रत अहमद रज़ा बरेलवी अलैहिर्रहमा लिखते हैं कि यह महज़ झूठ और मौज़ू है

(کزا فی احکام شریعت، حصہ دوم، صفحہ نمبر 164)

(2) मलफ़ूज़ात ए आला हज़रत में है कि यह रिवायत महज़ बातिल और मौज़ू है

(کزا فی ملفوظات اعلی حضرت، حصہ دوم، صفحہ نمبر 293)

(3) ख़लीफा ए हुज़ूर मुफ़्ती ए आज़म हिन्द, शारह ए बुखारी हज़रत अल्लामा मुफ़्ती शरिफ़ुल हक़ अम्ज़दी अलैहिर्रहमा लिखते हैं कि नअ़लैन मुक़द्दस पहने हुए अर्श पर जाना झूठ और मौज़ू है जैसा कि आला हज़रत इमाम अहमद ख़ान बरेलवी अलैहिर्रहमा ने इरफ़ान ए शरियत हिस्सा 2 में सफ़ा नं 9 पर तहरीर फ़रमाया है।

(کزا فی فتاویٰ شارح بخاری، جلد اول، صفحہ نمبر 306)

(4) एक और सवाल के जवाब में हज़रत अल्लामा मुफ़्ती शरिफ़ुल हक़ अम्ज़दी अलैहिर्रहमा फ़रमाते है कि इस रिवायत के झूठ और मौज़ू होने के लिए यही काफी है कि किसी हदीस की मोअतबर किताब में यह रिवायत मज़कूर नहीं, जो साहब यह बयान करते हैं कि नअ़लैन पाक पहने अर्श पर गए, उनसे पूछिए के कहां लिखा है।

(دیکھیے: فتاویٰ شارح بخاری، جلد اول، صفحہ نمبر 307)

(5) हज़रत अल्लामा मौलाना आसिम रज़ा क़ादरी मुजफ्फरपुरी मद्दा ज़िल्लहुल आली लिखते हैं कि तलाश के बावजूद फक़ीर की नज़र से कोई हदीस ए सहीह या ज़ईफ़ नहीं गुजरी जिसमें इस का सबूत हो "माअरिजुन नबूवत" सफ़ा नं ।।4 पर है कि,

انگاہ جبرئیل ردای از نور در بر آنسرور علیہ السلام
افگند و نعلینی از زمرد پائے اودر آور

यानी हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने वक्त ए मेअ़राज नूर की चादर हुज़ूर सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि वसल्लम को उड़ा दी और आप सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि वसल्लम के पाए अक़दस में जुमराद पत्थर से बना हुआ नअ़लैन शरीफ़ पहना दिए।

इससे मालूम हुआ कि नबी ए करीम सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि वसल्लम शब ए मेअ़राज जो नअ़लैन पाक पहन कर तशरीफ़ ले गए वो कोई आम नअ़लैन पाक न था, बल्कि अल्लाह तआ़ला की तरफ से था, और ख़ास उस रात को आपके लिए भेजा गया था मगर इसमें भी वाजेह तौर पर नअ़लैन पाक पहन कर अर्श पर जाना साबित नहीं लिहाजा इसके मुतअल्लिक़ सकूत (ख़ामोशी) बेहतर है।

(ملخصاً، فتاویٰ بریلی شریف، صفحہ نمبر352)

(6) हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद इस्माईल हुसैन नूरानी मद्दा ज़िल्लहुल आली लिखते हैं कि बाज़ सूफिया ए किराम के नज़दीक यह रिवायत साबित और दुरूस्त है चुनांचे अल्लामा इस्माईल हक़्क़ी रहमातुल्लाह अलैह ने तफ़सीर रूहुल बयान में इस रिवायत को तहरीर फ़रमाया है लेकिन उलमा ए मुहक़्क़ीन और मुहद्दिसीन ने इस रिवायत को बिल्कुल बेअसल और बातिल क़रार दिया है चुनान्चे अल्लामा यूसुफ़ नबहानी लिखते हैं कि

قد سئل القزوینی عن وطئہ صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم العرش بنعلہ
وقول الرب تقدس: لقد شرفت العرش بذالک یا محمد ھل لہ اصل ام لا؟
فاجاب بما نصہ: اما حدیث وطی النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم
العرش بنعلہ فلیس بصحیح ولا ثابت (الی قولہ) وکتب بعض المحدثین بعد
کلام القزوینی المذکور ما ذکرہ القزوینی ھو الصواب وقد وردت قصۃ
الاسراء والمعراج عن نحو اربعین صحابیا لیس فی حدیث احد منھم انہ
علیہ الصلاۃ والسلام کان فی رجلیہ تلک اللیلۃ نعل-
(جواھر البحار جلد 3، صفحہ نمبر 499،500)

यानी इमाम क़ुज़वैनी से हुज़ूर सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि वसल्लम के अर्श पर नअ़लैन लेकर तशरीफ़ ले जाने के इस फ़रमान "ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि वसल्लम आपने इन नअ़लैन के ज़रिए अर्श को शर्फ़ बख़्शा है"
के बारे में पूछा गया कि इसकी कोई असल है कि नहीं ? तो आपने जवाब दिया कि जहां तक हुज़ूर सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि वसल्लम के नअ़लैन लेकर अर्श पर तशरीफ़ ले जाने का ताअल्लुक़ है तो यह ग़लत और ग़ैर साबित है बाज़ मुहद्दिसीन ने इमाम क़ुज़वैनी

के इस जवाब के बारे में लिखा है कि यही दुरूस्त है और (यह बात भी क़ाबिल ए ग़ौर है कि) मेअ़राज़ शरीफ़ का वाकया तक़रीबन 40 सहाबा किराम से मरवी है लेकिन उन में से किसी भी रिवायत में यह वारिद नहीं के उस रात हुज़ूर सल्लल्लाहो तअ़ाला अलैहि वसल्लम के पाऊं में नअ़लैन थे।

मज़कूरा इबारत से मालूम हुआ कि तहरीर करदा रिवायत की कोई असल नहीं, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी अलैहिर्रहमा ने भी अहक़ाम ए शरियत पेज़ नंबर 166 में इस रिवायत को मौज़ू और ग़लत क़रार दिया है, बहार ए शरियत में सदरूश्शरिया हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अमजद अली आज़मी अलैहिर्रहमा लिखते हैं कि यह मशहूर है कि शब ए मेअ़राज नबी ए करीम सल्लल्लाहो तअ़ाला अलैहि वसल्लम अर्श पर नअ़लैन पहन कर तशरीफ़ ले गए और कुछ मुकर्रीरीन इसके मुतअल्लिक़ एक रिवायत भी बयान करते हैं, उसका सबूत नहीं और यह भी साबित नहीं कि नंगे पांव थे लिहाज़ा इसके मुतअल्लिक़ सकूत (ख़ामोश) रहना बेहतर ओ मुनासिब है

(بہار شریعت، حصہ 16، صفحہ نمبر165)
(انظر: انوار الفتاوی، صفحہ نمبر190)

इस पूरी गुफ्तगू से यह बात साबित हो जाती है कि मज़कूरा रिवायत बेअसल और मौज़ू है लिहाज़ा इसे बयान करने से बचना लाज़िम है।

OUR OTHER BOOKS











